सभी प्रकार की सरकारी सहायताओं से मुक्त, खोजी पत्रकारिता का तेज बढ़ता अखबार

दैनिक

themovementofindia.in

# द मूवमेंट ऑफ़ इंडिया

RNI No. RAJHIN/2012/48876
पोस्टल पंजीयन नं. भीलवाड़ा / 2025-2027

खोजी खबरें-तेज नजरें

प्रेरणा स्रोत - स्व. चुन्नीलाल सालवी

ये अखबार ही नहीं क्रांति का अभियान है। मानवता एवं लोकतंत्र का सजग प्रहरी, ये दुष्टों की मौत का सामान है।

वर्ष - 14 अंक -29 | 23 जुलाई 2025,बुधवार | संपादक - दयाराम दिव्य | सहसंपादक - चाहत सालवी | मूल्य - 2 रू.

## सिम्स हॉस्पिटल की कैंटीन और 5 टॉयलेट सीजः अतिक्रमण को लेकर यूआईटी की टीम ने की कार्रवाई

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भीलवाड़ा में अतिक्रमण की शिकायत पर यूआईटी की टीम ने मंगलवार शाम एक प्राइवेट हॉस्पिटल में कार्रवाई की। अस्पताल की टॉयलेट और कैंटीन को सीज कर दिया। मामला सिम्स हॉस्पिटल से का है। मंगलवार शाम यहां यूआईटी की टीम पहुंची और अस्पताल में कार्रवाई करते हुए इसके पीछे बने पांच टॉयलेट और कैंटीन को सीज कर दिया गया। बताया जा रहा है कि यूआईटी को अस्पताल द्वारा अतिक्रमण करने की शिकायत मिल रही थी। निर्माण कार्य नक्शे के मुताबिक नहीं किया गया था। इस की शिकायत के बाद आज यूआईटी के एक्सईएन, तहसीलदार और होमगार्ड के जवान

अस्पताल पहुंचे और कार्रवाई करते हुए अगले आदेशों तक इसे सीज कर दिया गया ।

## बढ़ती चोरियों से नाराज ग्रामीणों ने किए बाजार बंदःनारेबाजी, प्रदर्शन के बाद फूंका टायर

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भीलवाड़ा के रायला कस्बे में पिछले लंबे समय से लगातार हो रही चोरियों से नाराज लोगों का गुस्सा आज फूट पड़ा। लोगों ने कस्बे के बाजार बंद करवाए और टायर जलाकर प्रदर्शन किया। ग्रामीणों का आरोप है कि पुलिस व्यवस्था प्रॉपर और गश्त की कमी से कस्बे में चोरी की वारदात बढ़ती जा रही हैं। अब तक किसी वारदात का खुलासा नहीं हो सका ना चोरियां रुक पा रही हैं। चोरों ने कई मकान और दुकान में चोरियां की हैं। बीते दिनों चोरों ने चौथ माता मंदिर को भी निशाना बनाया था। अब तक पुलिस इस पर कोई कार्रवाई नहीं कर पाई। इसी से नाराज होकर गुस्साए लोगों ने रायला कस्बे के बाजार बंद करवा दिए। सभी ग्रामीण और व्यापारी मार्केट में इकट्ठा हुए यहां उन्होंने टायर फूंक कर अपना प्रदर्शन किया। रायला थाना पुलिस मौके पर पहुंची और लोगों से समझाया।

## राजस्थान के 6 जिलों में बारिश का अलर्ट, अजमेर में डूबने से 2 बच्चों की मौत, नागौर में घुटनों तक पानी में

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

राजस्थान में मानसून एक बार फिर सक्रिय होता नजर आ रहा है। मौसम विज्ञान केंद्र, जयपुर ने बुधवार को राज्य के 6 जिलों में हल्की से मध्यम और कहीं-कहीं तेज बारिश को लेकर येलो अलर्ट जारी किया है। यह अलर्ट अजमेर, अलवर, सवाई माधोपुर, नागौर, भरतपुर और करौली जिलों के लिए है। हालांकि, 24 और 25 जुलाई को मौसम शुष्क रहने के आसार हैं। वहीं 27 जुलाई से राज्य के कई हिस्सों में भारी बारिश का सिलसिला शुरू होने की संभावना जताई गई है। अजमेर जिले के अरांई क्षेत्र से एक बेहद दुखद खबर सामने आई है, जहां मंगलवार को दो बच्चे एक पौंड में डूब गए और उनकी मौके पर ही मौत हो गई। यह हादसा उस समय हुआ जब बच्चे बारिश के पानी से भरे गड्ढे में खेल रहे थे। स्थानीय लोगों ने उन्हें बचाने की कोशिश की लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

नागौर जिले की खींवसर ग्राम पंचायत में हालात इतने खराब हो गए हैं कि रास्तों पर घुटनों तक पानी भर गया है। मंगलवार को जब एक व्यक्ति की अंत्येष्टि के लिए शव को श्मशान ले जाया जा रहा था, तो लोगों को पानी में से होकर

अर्थी ले जानी पड़ी। यह तस्वीरें प्रशासन की तैयारियों पर सवाल खड़े करती हैं।

जोधपुर संभाग के बालोतरा के डडांली गांव के पास मंगलवार सुबह बड़ा हादसा होते-होते टल गया। यहां लूणी नदी में अचानक आए तेज बहाव के कारण एक मिनी बस फंस गई, जिसमें 6 से ज्यादा लोग सवार थे। यह बस बायतु से करना भूखा भगत सिंह रूट पर जा रही थी। मौके पर पहुंची राहत टीम ने क्रेन की मदद से बस को सुरक्षित बाहर निकाला।सवाई माधोपुर से करौली और हाड़ौती के सपोटरा मार्ग पर भारी बारिश के कारण जलभराव हो गया है। भूरी पहाड़ी के पास बह रही बनास नदी की पुलिया तेज बहाव में बह गई, जिससे मार्ग पूरी तरह बंद हो गया है। इससे आमजन की आवाजाही बुरी तरह प्रभावित हुई है। पिछले 24 घंटे में प्रदेश के कई जिलों में अच्छी बारिश दर्ज की गई है। अलवर के बहादुरगढ़ में सबसे ज्यादा 70 मिमी बारिश हुई, जबकि खैरथल में 63 मिमी, मुंडावर में 51 मिमी और अलवर शहर में 64.2 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई। करौली में 25 मिमी, उदयपुर में 35 मिमी और सवाई माधोपुर के खंडार में 64 मिमी बरसात दर्ज की गई। भरतपुर के डीग में 60 मिमी, रूपवास में 22 मिमी, हनुमानगढ़ के भादरा में 25 मिमी, चूरू के सादुलशहर में 14 मिमी, जयपुर के आंधी में 16 मिमी और तूंगा में 18 मिमी बारिश हुई।

मौसम केंद्र जयपुर के निदेशक राधेश्याम शर्मा ने बताया कि बंगाल की खाड़ी में एक साइक्लोनिक सर्कुलेशन सक्रिय है, जो अगले 24-36 घंटे में लो-प्रेशर सिस्टम में बदल सकता है। इसके प्रभाव से 27 से 30 जुलाई के बीच राजस्थान में भारी बारिश की गतिविधियां तेज हो सकती हैं। इस दौरान कोटा संभाग में कहीं-कहीं अति भारी बारिश की चेतावनी है, जबकि जयपुर, भरतपुर और उदयपुर संभाग में भारी बारिश की संभावना जताई गई है।एक ओर जहां पूर्वी राजस्थान में बारिश ने राहत दी है, वहीं पश्चिमी हिस्सों में गर्मी और उमस ने फिर से परेशान करना शुरू कर दिया है। श्रीगंगानगर में मंगलवार को अधिकतम तापमान 39.2 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। जैसलमेर में 36.5, बाड़मेर में 36.4, बीकानेर में 35.5 और जयपुर में 35 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज हुआ।

राजस्थान में मानसून की वापसी के संकेत मिलने लगे हैं। राज्य के कई जिलों में जहां बारिश राहत लेकर आई है, वहीं जलभराव और हादसों ने चुनौतियां भी खड़ी कर दी हैं। मौसम विभाग की चेतावनी के मद्देनजर प्रशासन को अलर्ट रहने की जरूरत है, ताकि आगामी भारी बारिश में किसी भी तरह की जनहानि न हो सके।

## प्रभु का ऐसा भक्त देखा है? सांवलिया सेठ मंदिर में शख्स ने चढ़ाया चांदी का मोबाइल

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भगवान को खुश रखने या करने के लिए भक्त क्या-क्या नहीं करते। कोई एग्जाम में पास कराने पर लड्डू से लेकर सबकुछ चढ़ाने को तैयार रहता है तो कोई नौकरी दिलाने के नाम पर 108 बार परिक्रमा लगाने का वादा करता है। कई भक्त तो ऐसे हैं जो एक से एक महंगी चीज भगवान के चरणों में अर्पण करते हैं। इसी कड़ी में चित्तौड़गढ़ के प्रसिद्ध सांवलिया सेठ मंदिर का एक वीडियो वायरल है। यहां मध्य प्रदेश के एक व्यापारी ने चांदी का मोबाइल फोन चढ़ाया है। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो इस खास फोन का वजन 250 ग्राम बताया जा रहा है। 30 सेकेंड से भी कम समय का यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वीडियो में व्यापारी आदमी फेमस सांवलिया सेठ मंदिर के अंदर है जहां उसके हाथों में एक चढ़ावे वाली टोकरी दिखाई दे रही है। कैमरा जूम करने पर बीच में वह बेशकीमती मोबाइल फोन भी दिखता है,जिसे वह प्रभु के चरणों में अर्पण करने लाया है। उसके साथ एक महिला और छोटा सा बच्चा भी है। इसके बाद वह उसे भगवान के चरणों में अर्पण कर दान पेटी में उसे डाल देता है। सांवलिया सेठ भगवान कृष्ण का एक बहुत ही पूजनीय रूप हैं, जिनकी पूजा मुख्य रूप से राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में स्थित सांवरिया जी मंदिर में की जाती है। उन्हें ÷दिव्य व्यापारी÷ के नाम से जाना जाता है और वे विशेष रूप से व्यापारियों और भक्तों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं, जो मानते हैं कि वे समृद्धि लाते हैं और इच्छाओं को पूरा करते हैं। यह मंदिर अपने आप में एक बड़ा तीर्थ स्थल है, जो खासकर जन्माष्टमी जैसे त्योहारों के दौरान भारी भीड़ को आकर्षित करता है।

C M Y K

## सम्पादकीय

### आतंकवाद पर आत्मघाती रवैया

बंबई की लोकल ट्रेनों को इस महानगर की जीवनरेखा कहा जाता है। 19 साल पहले 11 जुलाई, 2006 को इसी जीवनरेखा में सैकड़ों लोगों की जीवनलीला समाप्त हो गई थी। उस दिन सात लोकल ट्रेनों में छह मिनट के भीतर शृंखलाबद्ध बम धमाकों में 187 लोग मारे गए और 800 से अधिक घायल हुए थे। इन धमाकों को भारतीय इतिहास के सबसे भीषण आतंकी हमलों में से एक माना गया। 7/11 धमाकों की भयावहता ऐसी थी कि कई घायल अपनी चोट से उबर नहीं पाए और बाद में उनकी मृत्यु हो गई। उन वीभत्स दृश्यों के साक्षी बने तमाम लोग मानसिक रूप से बीमार हो गए। हमलों की जांच महाराष्ट्र एटीएस को सौंपी गई। एटीएस की जांच में सामने आया कि धमाकों के पीछे पाकिस्तान की कुख्यात खुफिया एजेंसी आइएसआइ थी, जिसने स्टूडेंट्स इस्लामिक मूवमेंट आफ इंडिया यानी सिमी के स्थानीय जिहादियों का इस्तेमाल किया। इन धमाकों में पाकिस्तानी भी शामिल थे और उनमें से एक धमाकों में मारा भी गया था। मामले से जुड़े आरोपपत्र में एटीएस ने 28 लोगों को आरोपित बनाया, जिनमें से 13 पर ही केस चल सका। शेष 15 में पाकिस्तानी नागरिक भी शामिल हैं, जो आज तक जांच एजेंसियों की पकड़ से बाहर हैं। विशेष मकोका न्यायालय ने 2015 में आरोपितों में से पांच को मृत्युदंड और सात को आजीवन कारावास की सजा सुनाई थी। अब 2025 में बांबे हाई कोर्ट ने सभी सजायाफ्ता 12 लोगों को यह कहते हुए दोषमुक्त कर दिया कि अभियोजन पक्ष अपने आरोप सिद्ध करने में पूरी तरह विफल रहा। उसने इसके कई कारण बताए, जो न केवल चौंकाने वाले, अपितु ऐसे संवेदनशील मामलों में लचर रवैये को भी दर्शाने वाले हैं।

**प्रधान संपादक - दयाराम दिव्य**

# हरित राजस्थान की ओर बढ़ता कदम, भजनलाल सरकार की पर्यावरणीय क्रांति

भीलवाड़ा / जयपुर, 22 जुलाई। राजस्थान की पहचान लंबे समय तक एक रेगिस्तानी और जल-संकटग्रस्त राज्य के रूप में रही है, लेकिन अब इस छवि को बदलने का संकल्प मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने लिया है। उनका नेतृत्व पर्यावरणीय चेतना को केवल नीति तक सीमित नहीं रख रहा, बल्कि उसे जन-आंदोलन का रूप दे रहा है। हरियाली, जल संरक्षण, स्वच्छ ऊर्जा और सतत विकास अब राजस्थान की शासन प्राथमिकताओं में शीर्ष पर हैं।

राजस्थान का पहला ग्रीन बजट- विकास और पर्यावरण का संतुलन

भजनलाल सरकार ने 2025-26 के लिए प्रदेश का पहला ग्रीन बजट पेश कर एक ऐतिहासिक शुरुआत की है। इस बजट में राज्य के कुल स्कीम खर्च का 11.34 प्रतिशत, यानी 27,854 करोड़ रुपये ग्रीन ग्रोथ से जुड़ी परियोजनाओं के लिए निर्धारित किए गए हैं। सरकार का लक्ष्य है कि 2030 तक राज्य संयुक्त राष्ट्र के सस्टेनेबल डवलपमेंट गोल्स को हासिल करे। इसके लिए जलवायु अनुकूलन की पांच वर्षीय योजना तैयार की जा रही है और एक सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर क्लाइमेट चेंज की स्थापना की जाएगी, जिससे पर्यावरणीय शोध और नीति निर्माण को मजबूती मिलेगी।

हरियालो राजस्थान अभियान- एक जनआंदोलन बना पर्यावरण मिशन

एक पेड़ मां के नाम अभियान से प्रेरणा लेते हुए राज्य सरकार ने 'हरियालो राजस्थान' महाअभियान शुरू किया है। पिछले मानसून में 7 करोड़ से अधिक पौधे लगाए जा चुके हैं और इस वर्ष 10 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। यह अभियान केवल वृक्षारोपण तक सीमित नहीं है, बल्कि इससे जुड़े 'मातृ वन' और 'स्मृति वन' जैसी संकल्पनाएं इसे एक भावनात्मक आंदोलन बना रही हैं। हर जिले में आमजन की भागीदारी से मातृ वन बनाए जा रहे हैं, जहाँ नागरिक अपने परिजनों की स्मृति में वृक्ष लगाकर पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं। इस अभियान को डिजिटल रूप से ट्रैक करने के लिए 'हरियालो राजस्थान' मोबाइल ऐप भी विकसित किया गया है।

**नवीन ऊर्जा में आत्मनिर्भरता- किसान बना ऊर्जा उत्पादक**

राज्य में सौर ऊर्जा के क्षेत्र में रिकॉर्ड प्रगति हुई है। भजनलाल सरकार के कार्यकाल में 1190 मेगावाट की क्षमता वाले 592 सौर संयंत्र लगाए गए हैं। ये संयंत्र कुसुम योजना के तहत किसानों द्वारा स्वयं अथवा डेवलपर के साथ साझेदारी में स्थापित किए गए हैं, जिससे किसान अब अन्नदाता के साथ-साथ ऊर्जादाता भी बन गए हैं। इन संयंत्रों से उत्पादित बिजली महज ढाई से तीन रुपये प्रति यूनिट में डिस्कॉम्स को मिल रही है, जो थर्मल बिजली की तुलना में बेहद सस्ती और प्रदूषणरहित है। यह योजना न केवल किसानों की आय बढ़ा रही है, बल्कि ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में भी बड़ा कदम है। **जल संरक्षण में अभिनव प्रयास- कर्मभूमि से मातृभूमि अभियान** राजस्थान के परंपरागत जल-स्रोतों की संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिए 'कर्मभूमि से मातृभूमि' अभियान की शुरुआत की गई है। यह पहल उन प्रवासी राजस्थानियों को उनके गाँवों से जोड़ रही है, जो देश-विदेश में बस चुके हैं लेकिन अपनी मातृभूमि के प्रति जुड़ाव बनाए रखना चाहते हैं। इस अभियान के तहत प्रवासीजन रिचार्ज शाफ्ट और जल संरक्षण संरचनाओं के निर्माण में आर्थिक और तकनीकी सहयोग दे रहे हैं। भूजल पुनर्भरण को बढ़ावा देने वाली इन संरचनाओं के माध्यम से गिरते भूजल स्तर को सुधारने की दिशा में सार्थक प्रयास हो रहे हैं। अभियान के अंतर्गत अगले चार वर्षों में 45 हजार जल संरचनाएं बनाने का लक्ष्य रखा गया है, जिनमें से हजारों पर कार्य शुरू हो चुका है।

**वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान: जनभागीदारी से जल संस्कृति की पुनर्स्थापना**

5 जून से 20 जून तक चलाया गया वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा की जन-संवेदनशील पहल का जीवंत उदाहरण है। अभियान के दौरान राज्यभर में जल स्रोतों की साफ-सफाई, पूजन, जलाभिषेक और श्रमदान जैसे कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें मुख्यमंत्री स्वयं भी भागीदार बने। इस अभियान के तहत 3 लाख 70 हजार से अधिक कार्यक्रमों में 2.53 करोड़ लोगों ने भाग लिया। लगभग 42 हजार जलस्रोतों की सफाई और मरम्मत की गई तथा हजारों नए जल संरक्षण कार्य प्रारंभ किए गए। अभियान में जल को लेकर जन चेतना को एक सामाजिक आंदोलन का रूप मिला।

**स्थायी परिवर्तन की ओर- स्वच्छ ऊर्जा और नवाचार की पहल** - राज्य सरकार ने क्लीन कुकिंग को बढ़ावा देने के लिए एक लाख लाभार्थियों को निशुल्क इंडक्शन कुकटॉप वितरित करने का निर्णय लिया है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्लास्टिक के उपयोग को सीमित करने के लिए ग्राम पंचायतों में बर्तन बैंक की व्यवस्था की जा रही है। वेस्ट टू हेल्थ पार्क्स और क्लीन एंड ग्रीन टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट सेंटर जैसे नवाचारों से पर्यावरण संरक्षण को तकनीकी मजबूती दी जा रही है।

**हरित राजस्थान—भविष्य की दिशा, वर्तमान की आवश्यकता**

मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा का नेतृत्व राजस्थान को पारंपरिक रेगिस्तान से हरित समृद्धि की ओर ले जा रहा है। यह केवल वृक्षारोपण या जल संरक्षण की पहल नहीं है, बल्कि यह समग्र दृष्टिकोण है जो पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों को जोड़ता है। आज राजस्थान सतत विकास की दिशा में देश के अग्रणी राज्यों में शुमार हो रहा है। हर नागरिक की भागीदारी और सरकार की प्रतिबद्धता के साथ, 'हरित राजस्थान' अब केवल एक सपना नहीं, बल्कि साकार होता यथार्थ है।

**जिला कलेक्टर के निर्देशन में जिलेभर में 11 लाख पौधों का किया जाएगा रोपण** जिला कलेक्टर श्री जसमीत सिंह संधू के निर्देशानुसार हरियाली तीज के शुभ अवसर पर पुलिस लाइन परिसर में 27 जुलाई को जिला स्तरीय मुख्य कार्यक्रम का आयोजन प्रस्तावित है। इस अवसर पर व्यापक जनसहभागिता के माध्यम से जिलेभर में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए 11 लाख से अधिक पौधों का रोपण किया जाएगा।

## नगर निगम का श्रावण मास में विशिष्ट आयोजन जारी, ऋण मुक्तेश्वर महादेव मंदिर एवं बाल हनुमान मंदिर में हुआ सहस्त्रधारा अभिषेक

**भीलवाड़ा ।** नगर निगम भीलवाड़ा द्वारा श्रावण मास के पावन अवसर पर 70 वार्डों के 70 मंदिरों में 70 अभिषेक कार्यक्रम के ग्यारहवें दिन महापौर राकेश पाठक के नेतृत्व में शहर के दो वार्डों में आयोजन संपन्न हुआ। वार्ड 11 के अंतर्गत बाल हनुमान मंदिर में पार्षद इंदु टाक की उपस्थिति में एवं वार्ड 10 में ऋण मुक्तेश्वर महादेव मंदिर में पार्षद महेंद्र घबरानी की उपस्थिति में सहस्त्रधारा अभिषेक का आयोजन हुआ। पंडित योगेन्द्र शर्मा सहित सहयोगी पंडितों ने अभिषेक संपन्न कराया।

इस दौरान प्रताप मंडल अध्यक्ष नागेंद्र राव, कार्यक्रम संयोजक ओम साईंराम, पार्षद गजेंद्र चुण्डावत, मनोज टाक, पंडित द्वारका प्रसाद, मनोज बुलानी, विक्रम सोलंकी, गौरव टाक, अमित गुप्ता, संजय त्रिवेदी, संतोष दुबे, रूपेंद्र नायर, संजय मेहता, जितेंद्र मोटवानी, अक्षय टेलर, जितेंद्र पोपटानी, हैप्पी त्रिवेदी, मोडूदास वैष्णव, रामलाल माली, सोनू मोतियानी, पवन मोतियानी, कैलाश, जमना देवी, मंजू देवी शर्मा, शीला देवी, कंचन मोतियानी, गुड्डी देवी सहित बापूनगर महिला मंडल एवं अनेक वार्डवासी एवं श्रद्धालु मौजूद रहे।

## आर सी व्यास कोलोनी रॉयल स्ट्रीट के परिवारजनों ने आयोजित किया वनभ्रमण कार्यक्रम

**द मूवमेंट ऑफ इंडिया**

**भीलवाड़ा ।** आर सी व्यास कॉलोनी की रॉयल स्ट्रीट में रहने वाले सभी परिवारजनों का वनभ्रमण कार्यक्रम आयोजित किया गया ।अध्यक्ष राधेश्याम पाटोदिया ने बताया कि कमलेश सोमानी व अमित झंवर द्वारा पारिवारिक गेम्स खिलाये गए, जिसमें लड्डू जलेबी गेम में प्रथम कोमल दालान, द्वितीय ज्योति झंवर , तृतीय अनूप दालान रहे। कपल गेम में प्रथम स्थान पर माधुरी व दीपक डिडवानिया, द्वितीय दिव्या व दीपक चौधरी व तृतीय स्थान पर नीतू व कमलेश सोमानी रहे। इडली साम्भर गेम में प्रथम स्थान पर इरा माहेश्वरी व द्वितीय हिमांशी रही।

प्रवक्ता गोविंद प्रसाद लढ़ा ने बताया कि सांस्कृतिक कार्यक्रम में एरा माहेश्वरी , अरनव लढ़ा व दिव्या चौधरी द्वारा प्रस्तुत भजनों ने वातावरण को भक्तिमय बना दिया। विजेताओं को पुरस्कार प्रायोजक कैलाश चंद्र सोमानी द्वारा प्रदान किये गए।

## श्री सांवरिया सेठ बचत समिति का सपरिवार सावन वन भ्रमण कार्यक्रम आयोजित

**द मूवमेंट ऑफ इंडिया**

**भीलवाड़ा। (पोरवाल)** श्री सांवरिया सेठ बचत समिति (स्व. नाथुलाल पटवारी का धड़ा) के सदस्यो का सपरिवार एक दिवसीय वन भ्रमण हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ। समिति अध्यक्ष राकेश पटवारी ने बताया कि इस धार्मिक यात्रा का उद्देश्य धड़ा के परिवारों में आपसी मेलजोल बढ़ाना एवं प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद प्राप्त करना था । इस धड़े में पटवारी, तोतला, चेचाणी, लाठी, भंडारी, जागेटिया, बहेडिया, मंत्री, बिड़ला, दरगड, काबरा, डाड, सोडाणी, धूपड़ एवं कास्ट परिवार के सदस्य सम्मिलित होते है।

अध्यक्ष पटवारी ने बताया कि समिति द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में सावन के महीने में सुखानंद महादेवजी, खेड़ापति बालाजी भादवा माताजी के दर्शन किए एवं प्राकृतिक हरियाली व झरने का 111 सदस्यों ने आनंद लिया। कोषाध्यक्ष विवेक पटवारी ने बताया कि वन भ्रमण यात्रा में राजेश पटवारी, रामपाल लाठी, महेश भंडारी, भंवरलाल लाठी, अरविंद चेचानी, राधेश्याम तोतला, चांदमल बहेड़िया, रामपाल जागेटिया, सत्यनारायण तोतला, चांदमल दरगड़, मदन मंत्री, घीसू लाल तोतला, दिनेश, किशन, सतीश पटवारी, संजय भंडारी आदि सम्मिलित हुए ।

## रहबरी का सवाल है!

साल 2019 के बाद से भारत संयुक्त राष्ट्र में मतदान से जितनी बार बाहर रहा है, उतना पहले कभी नहीं हुआ था। मोदी सरकार सचमुच ग्लोबल साउथ की रहबरी करना चाहती है, तो उसे ये नजरिए छोड़ना होगा। प्रधानमंत्री की एक और विदेश यात्रा का एलान हो गया है। इस बार नरेंद्र मोदी मालदीव और ब्रिटेन जाएंगे। अगर उन्होंने शंघाई सहयोग संगठन के शिखर सम्मेलन में भाग लेने का फैसला किया, तो अगले महीने के आखिर में उनकी चीन यात्रा होगी। कुछ ही समय पहले मोदी ने कनाडा में जी-7 (बतौर विशेष आमंत्रित) और ब्राजील में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लिया। वर्तमान सरकार के पैरोकार प्रधानमंत्री की इन यात्राओं को भारत की सक्रिय विदेश नीति का संकेत बताते हैं। सरकार के प्रतिनिधियों का दावा है कि मोदी की सक्रिय विदेश नीति से भारत ग्लोबल साउथ (विकासशील देशों) के नेता के रूप में उभरा है। उनके मुताबिक भारत विश्व मंचों पर ग्लोबल साउथ की 'आवाज' बना है। साथ ही वह एकमात्र देश है, जो ग्लोबल साउथ और विकसित दुनिया के बीच पुल बनने की हैसियत रखता है। इससे भारत के हित कितने सधे हैं, इस सवाल को यहां हम छोड़ देते हैं। मगर यह प्रश्न विचारणीय है कि वह 'आवाज' क्या है, जिससे आज अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की विशिष्ट पहचान बनती हो? 'आवाज' का तात्पर्य अक्सर स्पष्ट समझ, दो-टूक रुख, और उन्हें बेलाग कहने के साहस से समझा जाता है। आखिर रहबरी की भूमिका वही निभा सकता है, जो उचित मार्ग बता सकने में सक्षम हो। संयुक्त राष्ट्र बेशक आज भी ऐसा सबसे उपयुक्त मंच है, जहां ऐसी भूमिका की सर्वाधिक गुंजाइश है। मगर वहां भारत 'आवाज' धुंधली-सी हो गई लगती है। एक अंग्रेजी अखबार के 1955 से 2025 तक संयुक्त राष्ट्र में हुए मतदान में भारत के वोट के अध्ययन का यही निष्कर्ष है। 2019 के बाद से भारत ने वहां मतदान में भाग ना लेने का फैसला जितनी बार किया, उतना पहले कभी नहीं हुआ था। इस दौरान हर वर्ष 44 प्रतिशत मौकों पर भारत मतदान से बाहर रहा। यानी इनसे संबंधित मामलों में भारत का कोई स्पष्ट रुख सामने नहीं आया। क्या इस ट्रेंड के साथ भारत मार्ग-दर्शक की भूमिका निभा सकता है? रहबर से तो बच-बच कर चलने की अपेक्षा नहीं रखी जाती। अतः मोदी सरकार सचमुच रहबरी करना चाहती है, तो उसे ये नजरिए छोड़ना होगा।

## पुराना पड़ गया फॉर्मूला!

आसान शर्तों पर ऋण की उपलब्धता बढ़ा कर अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने की भारतीय रिजर्व बैंक की कोशिशें कामयाब नहीं हुई है। मनी सप्लाई बढ़ाने के कदमों का क्रेडिट ग्रोथ पर ना के बराबर असर हुआ है। यह समझ अब गलत साबित हो रही है कि बैंकों के पास ऋण देने के लिए अधिक नकदी उपलब्ध होने पर आर्थिक वृद्धि दर तेज होती है। मान्यता है जब बैंक आसान शर्तों पर कर्ज देते हैं, तो लोग ऋण लेकर टिकाऊ उपभोक्ता सामग्रियों या मकान आदि की अधिक खरीदारी करते हैं। इससे बढ़ी मांग के कारण उद्योगपति निवेश बढ़ाते हैं, जिससे आर्थिक गतिविधियां तेज होती हैं। मगर अब नए बने हालात में यह सामान्य समझ जवाब देती नजर आ रही है। पिछले सात महीनों में इस माध्यम से अर्थव्यवस्था की रफ्तार बढ़ाने की भारतीय रिजर्व बैंक की कोशिशें कामयाब नहीं हुई है। रिजर्व बैंक ने दिसंबर 2024 से मनी सप्लाई बढ़ाने के लगातार कदम उठाए हैं। बीते फरवरी से लेकर अब तक ब्याज दरों में वह एक प्रतिशत की कटौती कर चुका है। लेकिन इसका क्रेडिट ग्रोथ पर ना के बराबर असर हुआ है। यानी अपेक्षाकृत सस्ता ऋण उलपलब्ध होने के बावजूद इसे लेने के लिए उपभोक्ताओं या कंपनियों की कतार नहीं लगी है। यह बात खुद रिजर्व बैंक के आंकड़ों से जाहिर हुई है। इनके मुताबिक बीते मई में भारतीय बैंकों से लिए गए गैर-खाद्य कर्ज में 9.8 प्रतिशत वृद्धि हुई, जबकि अप्रैल में ये दर 11.2 फीसदी थी। मई 2024 में यह दर 16.2 प्रतिशत रही थी। सिर्फ उद्योगों के ऋण पर ध्यान दें, तो इसमें वृद्धि दर महज 4.9 प्रतिशत रही। इस परिघटना से अमेरिकी बैंक जेपी मॉर्गन के अर्थशास्त्रियों के इस कथन की पुष्टि हुई है कि एक हद के बाद नकदी बढ़ाने का उपाय बेअसर हो जाता है। इसी महीने के आरंभ में प्रकाशित एक टिप्पणी में इन अर्थशास्त्रियों ने कहा कि नकदी की उपलब्धता का ऋण बढ़ने या घटने से कोई संबंध नहीं है। कुछ अन्य अर्थशास्त्रियों ने ध्यान दिलाया है कि अगर अर्थव्यवस्था में गति हो, तो ब्याज दर चाहे कुछ भी रहे, ऋण लेने वालों की कतार लगी रहती है। तो संदेश यह है कि मौद्रिक नीति से अर्थव्यवस्था को संभालने की कोशिशें अब बेमतलब हैं। बाजार की सूरत बदलने के लिए अब बड़े नीतिगत बदलावों की जरूरत है, जो आरबीआई के हाथ में नहीं है।

# वेदों, उपनिषदों में शिव निराकार ब्रह्म के रूप!

"शिव" का शाब्दिक अर्थ है कल्याणकारी। और ईश्वर ही संपूर्ण सृष्टि का अंतिम कल्याणकर्ता है—उसके अतिरिक्त कोई अन्य कल्याण करने वाला नहीं। यजुर्वेद (16/41) में प्रतिदिन की संध्योपासना में प्रयुक्त एक प्रसिद्ध मंत्र है: "नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।" वैदिक मतानुसार परमात्मा के अनेक गुण हैं, और इन्हीं गुणों के कारण उनके अनंत नाम हैं। इन्हीं अनंत नामों में एक नाम 'शिव' भी है। वैदिक परंपरा में शिव निराकार, अजन्मा, सर्वत्र व्यापक, सर्वशक्तिमान और सृष्टि के मूल रचयिता माने गए हैं। परंतु दुर्भाग्यवश वर्तमान में उन्हें वैदिक मत के प्रतिकूल एक सीमित रूप में देखा और पूजित किया जाता है—जहाँ वे कैलाश पर निवास करने वाले, साकार रूपधारी योगी के रूप में प्रतिष्ठित हैं। मूर्तियों, लिंग-स्वरूपों, जलाभिषेक, आरती और विविध उपासना-पद्धतियों के माध्यम से उनकी पूजा-अर्चना की जाती है, जो वैदिक दृष्टिकोण से हटकर है। यजुर्वेद (40/8) में स्पष्ट कहा गया है—"सः परि+अगात्", अर्थात ईश्वर सर्वव्यापक है। वह केवल पर्वत, मूर्ति, या किसी एक स्थान में नहीं, बल्कि संपूर्ण जगत में व्याप्त है। तैत्तिरीयोपनिषद् में कहा गया है—"तत् सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत्", यानी जिसने सृष्टि रची, वही स्वयं उसमें व्याप्त भी हो गया। यह ईश्वर के सर्वव्यापक होने का स्वाभाविक और अनिवार्य गुण है। वैदिक वाङ्मय में एकमात्र पूज्य देव निराकार, सर्वशक्तिमान परमेश्वर ही हैं। ऋग्वेद (1/81/5) में कहा गया है—"हे ईश्वर! न तेरे समान कोई हुआ है, न कोई होगा।" जिसने आकाश, सूर्य और समस्त जगत को रचा और जो जन्म तथा मृत्यु के चक्र से परे है, वही एक परमेश्वर उपास्य है। यही कारण है कि वेदों में स्पष्ट निर्देश है कि इस एक परमेश्वर को छोड़ किसी अन्य की उपासना मत करो। यजुर्वेद (40/8) में इस निराकार परमेश्वर को सर्वज्ञ, सर्वत्र व्यापक, शुद्ध, पाप-पुण्य के बंधनों से परे, और सबके मन का ज्ञाता कहा गया है। चारों वेदों का मूल ज्ञान इसी परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है। यजुर्वेद (7/4) में वर्णित है कि अष्टांग योग—जिसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि शामिल हैं—का मूल स्रोत भी यही परमेश्वर है। ऋषियों की परंपरा में "हिरण्यगर्भः योगस्य वक्ता" कहकर परमेश्वर को ही योग का उपदेशक कहा गया है। यही योग परंपरा वेदों से निकलकर गुरुपरंपरा के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी चली और पतंजलि ऋषि द्वारा इसे व्यवस्थित रूप में योगसूत्र के माध्यम से सूत्रबद्ध किया गया। महाभारत काल तक यह वैदिक व्यवस्था सुव्यवस्थित थी। ऋषि-मुनि, योगीजन, वेदों के अनुशीलन से ईश्वर की उपासना करते हुए शब्द-ब्रह्म (वेद) और परब्रह्म (ईश्वर) को प्राप्त करते रहे। किंतु महाभारत युद्ध के पश्चात वेदविद्या का तेज क्षीण हुआ। लोगों ने वेद से विमुख होकर अपनी-अपनी कल्पनाओं और सुविधाओं के अनुरूप पूजा-पद्धतियाँ गढ़ लीं। इसी विकृति के कारण अनेकों पंथ, मज़हब और देव-धारणाएँ उभरीं, जिन्होंने वैदिक शिव के स्थान पर साकार, पार्थिव, सीमित रूपों की कल्पनाओं को बढ़ावा दिया। परिणामस्वरूप आज अधिकांश लोग शिव को कैलाशवासी, त्रिनेत्रधारी, डमरूधारी, पार्वतीपति, आदि रूपों में जानते हैं—जबकि वेदों का शिव निराकार और सर्वव्यापक परमात्मा है।

"शिव" का शाब्दिक अर्थ है कल्याणकारी। और ईश्वर ही संपूर्ण सृष्टि का अंतिम कल्याणकर्ता है—उसके अतिरिक्त कोई अन्य कल्याण करने वाला नहीं। यजुर्वेद (16/41) में प्रतिदिन की संध्योपासना में प्रयुक्त एक प्रसिद्ध मंत्र है: "नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च"

यहाँ शम्भव, मयोभव, शंकर, मयस्कर, शिव और शिवतर—सभी एक ही परमात्मा के गुणविशेष हैं, जो उसे विविध रूपों में कल्याणकारी, सुखप्रदाता और मंगलकर्ता दर्शाते हैं। यजुर्वेद (3/60) में "त्र्यम्बकं यजामहे" मंत्र के माध्यम से भी उस परमात्मा की स्तुति की गई है, जो सबका पोषक है, बंधनों को काटने वाला है, और जो मृत्यु से मुक्ति प्रदान करता है। यजुर्वेद (16/2, 16/5, 16/49) में ईश्वर के भिषक—अर्थात वैद्य रूप—का उल्लेख मिलता है। वह औषधि-संरचना का ज्ञाता है, रोगों का निवारण करने वाला है, और सब जीवों को जीवन और आरोग्य देने वाला है। वेदों के समान ही उपनिषदों में भी शिव को निराकार ब्रह्म के रूप में ही स्वीकार किया गया है। कैवल्योपनिषद (1/8) में शिव को ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, इन्द्र, चंद्र, कालाग्नि आदि सभी देवताओं के मूलस्वरूप के रूप में चित्रित किया गया है:

"स ब्रह्मा स विष्णुः स रुद्रः सः शिवः"

माण्डूक्य उपनिषद (7) में शिव को तुरीय अवस्था—प्रपंच से रहित, शुद्ध, शान्त, अद्वैत आत्मा—के रूप में मान्यता दी गई है:

"प्रपञ्चोपशमं शान्तं शिवमद्वैतम्"

श्वेताश्वतर उपनिषद (4/14) में शिव को अति सूक्ष्म, सर्वव्यापक और शान्तिदायक परमात्मा बताया गया है, जिसे जानने से अन्तिम शांति की प्राप्ति होती है। इसी उपनिषद (6/9) में स्पष्ट कहा गया है:

"न च तस्य लिङ्गम्" — अर्थात उस परमात्मा का कोई चिन्ह, मूर्ति, प्रतीक नहीं है।

योगदर्शन (1/24-26) में ईश्वर को क्लेश-रहित, कर्मफल से परे, और कालातीत पुरुषविशेष बताया गया है। वह सभी प्राचीन गुरुओं का भी गुरु है—"स एष पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्"।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश में स्पष्ट किया है कि रुद्र वह है जो दुष्टों को उनके कर्मों का दंड देकर रुलाता है, शंकर वह है जो कल्याण करता है, महादेव वह जो विद्वानों का भी देव है, और शिव वह है जो स्वयं कल्याणस्वरूप और मंगलकारी है। वेदों में सर्वत्र एकेश्वरवाद है, और "शिव" उसी परमात्मा के गुणनाम के रूप में मान्य है।

समापनः शिव की ओर पुनरागमन

आज की आवश्यकता है—शिव को उनके वैदिक स्वरूप में पुनः समझने की। उन्हें केवल एक पारंपरिक देवता, योगी, कथा-पात्र या पर्वतवासी के रूप में नहीं, बल्कि वेदविहित निराकार ब्रह्म के रूप में जानने की। वेदों का शिव वही है जो ज्ञान का प्रकाश, धर्म की आत्मा, भय का विनाशक, और मोक्ष का प्रदाता है।

वही शिव है — जिसे जानकर शांति मिलती है। जिसे नमन करके कल्याण सुनिश्चित होता है।

## हर्षवर्धन श्रृंगला की क्या भूमिका होगी!

भारत के पूर्व विदेश सचिव और अमेरिका में भारत के राजदूत रहे हर्षवर्धन श्रृंगला को राज्यसभा के लिए मनोनीत किए जाने के बाद से ही इस बात की अटकलें लगाई जा रही हैं कि उनकी क्या भूमिका होगी? उनको क्या सिर्फ सांसद बना कर उनकी किसी सेवा का इनाम दिया गया है या उनकी योग्यता और क्षमता का कोई और इस्तेमाल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोचा है? ध्यान रहे श्रृंगला ने 2020 के अमेरिकी चुनाव से पहले वहां 'हाउडी मोदी' कार्यक्रम कराने में बड़ी भूमिका निभाई थी और उसके बाद जी 20 सम्मेलन में भी उन्होंने बहुत अच्छा काम किया। इससे प्रधानमंत्री काफी प्रभावित हुए थे। तभी पिछले साल के लोकसभा चुनाव में उनको दार्जिलिंग से चुनाव लड़ाने की बात चली थी। दार्जिलिंग लोकसभा सीट पर सिक्किम का काफी असर है और वहां भाजपा की जीत सुनिश्चित करने में दार्जिलिंग के मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग ने बड़ी भूमिका निभाई। ध्यान रहे श्रृंगला के पिता सिक्किम के थे। तभी यह भी चर्चा है कि अगली बार वे दार्जिलिंग से चुनाव लड़ेंगे। अभी उनकी उम्र 63 साल है और वे कई बरसों तक सक्रिय राजनीति में रहने वाले हैं। जानकार सूत्रों का कहना है कि आने वाले दिनों दिनों में विदेश मंत्री की अहम जिम्मेदारी मिल सकती है। वैसे भी एस जयशंकर को लेकर पिछले कुछ दिनों से अच्छा माहौल नहीं है। तभी उनकी जगह कांग्रेस के शशि थरूर के नाम की चर्चा हो रही थी। अगर श्रृंगला को जयशंकर वाली जगह मिलती है तो थरूर का क्या होगा यह भी बड़ा सवाल है।

## संघ, भाजपा के नए हीरो हैं धामी!

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नए हीरो के तौर पर उभर रहे हैं। संघ में भी उनकी खूब वाहवाही है तो भाजपा नेतृत्व भी उनके कामकाज को लेकर गदगद है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने उनकी तारीफ करते हुए कहा कि उत्तराखंड के मुख्यमंत्री ने निवेशक सम्मेलन में मिले प्रस्तावों को जमीन पर उतार दिया है। उन्होंने कहा कि एक लाख करोड़ रुपए से ज्यादा की परियोजनाओं को धरातल पर ला देना बहुत बड़ी बात है। गौरतलब है कि उत्तराखंड निवेशक सम्मेलन में 3.56 लाख करोड़ रुपए के निवेश का प्रस्ताव मिला था, जिसमें से एक लाख करोड़ रुपए का निवेश आ गया है। अमित शाह ने उस समय कहा था कि निवेश के प्रस्तावों को धरातल पर उतारना मुश्किल होता है। तभी जब एक लाख करोड़ का निवेश आया तो शाह ने इस पर धामी की तारीफ की। यह भी कहा गया कि राज्य में 81 हजार नई नौकरियों के अवसर बने हैं। इसी तरह उत्तराखंड पहला राज्य बना है, जिसने समान नागरिक संहिता लागू की है। यह संघ और भाजपा का पुराना एजेंडा रहा है, जिस पर धामी की सरकार ने अमल किया है। उत्तराखंड मॉडल पर ही देश के दूसरे हिस्सों में भी समान नागरिक संहिता लागू करने की बात हो रही है। सो, शासन के अलावा वैचारिक मुद्दों पर भी धामी की तारीफ हो रही है। धामी की सरकार खोज खोज कर उत्तराखंड के मुस्लिम नाम वाले गांवों, कस्बों के नाम बदल रही है। ये सारे काम राज्य सरकार चुपचाप कर रही है। इसे लेकर न तो ज्यादा प्रचार हो रहा है और न कोई विवाद हो रहा है। भाजपा की दूसरी पीढ़ी के जितने नेता मुख्यमंत्री बने हैं उनमें धामी एकमात्र हैं, जिनका कामकाज अच्छा माना जा रहा है।

# अचानक सब रिटायरमेंट की बात करने लगे!

बड़े आश्चर्य की बात है कि अचानक देश की फिजां में रिटायरमेंट की चर्चा शुरू हो गई। जिधर सुनिए उधर रिटायरमेंट की बातें हो रही हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस साल 17 सितंबर को 75 साल के होने वाले हैं और उससे पहले रिटायरमेंट की चर्चा हो रही है, उसका महत्व व जरुरत समझाई जा रही है और रिटायरमेंट के बाद की योजनाओं की चर्चा हो रही है। क्या यह महज एक संयोग है या इन चर्चाओं की टाइमिंग का कुछ और इशारा है? राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के सरसंघचालक ने 75 साल की उम्र में रिटायर होने की आवश्यकता बताई तो केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रिटायर होने के बाद की अपनी योजना बताई। उधर देश के जाने माने वरिष्ठ वकील दुष्यंत दवे ने 70 साल की उम्र में रिटायरमेंट की घोषणा कर दी। उन्होंने कहा कि अब वे प्रैक्टिस नहीं करेंगे। इस बीच भाजपा के सांसद निशिकांत दुबे ने याद दिलाया कि लालकृष्ण आडवाणी 90 साल की उम्र तक सांसद रहे थे। इस तरह उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भी अगले कई बरसों राजनीतिक रूप से सक्रिय बने रहने का संकेत दिया। इन बयानों और घटनाक्रमों पर विचार करने से पहले यह देखने की जरुरत है कि क्या सचमुच भाजपा में 75 साल की उम्र में रिटायर होने का कोई नियम है? अगर नहीं है तो क्यों प्रधानमंत्री मोदी के 75 साल का होने को इतना मुद्दा बनाया जा रहा है? ध्यान रहे 75 साल की उम्र में रिटायर किए जाने का कोई घोषित नियम नहीं है। हालांकि अघोषित रूप से इसे लागू किया गया है। भले हर बार 75 की उम्र पर नेताओं को रिटायर नहीं कराया गया हो लेकिन नेताओं को रिटायर कराने में उम्र एक पैमाना बना है। लालकृष्ण आडवाणी से लेकर मुरली मनोहर जोशी और शांता कुमार से लेकर सुमित्रा महाजन और बाबूलाल गौर तक अनेक मिसाल है, जब उम्र के आधार पर नेताओं को घर बैठा दिया गया। हालांकि 75 साल से ज्यादा उम्र के अनेक नेताओं को भाजपा ने चुनाव लड़ाया है। सबसे ताजा मिसाल झारखंड में रामचंद्र चंद्रवंशी की है, जिनको भाजपा ने पिछले साल 79 साल की उम्र में विश्रामपुर विधानसभा सीट से टिकट दिया था। ऐसी मिसाल हर राज्य में है। अब सवाल है कि जब उम्र की सीमा आधिकारिक रूप से तय नहीं की गई है फिर नरेंद्र मोदी के 75 साल की उम्र में रिटायर होने के कयास क्यों लगाए जा रहे हैं और क्यों इस तरह की बातें हो रही हैं, जिनसे उनके ऊपर दबाव बने? इसका जवाब पिछले साल के लोकसभा चुनाव के नतीजों में देखा जा रहा है। पिछले साल लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पूरी भाजपा चार सौ सीट के लिए लड़ रही थी। लेकिन भाजपा को 240 सीटें मिलीं। 2019 के मुकाबले उसको 63 सीटों का नुकसान हुआ। उसके बाद मोदी और उनकी टीम बैकफुट पर आई। नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू सहित अन्य घटक दलों के समर्थन से सरकार बनी। हालांकि उसके बाद हरियाणा, महाराष्ट्र और दिल्ली में चुनावी जीत से प्रधानमंत्री का कांफिडेंस वापस लौटा। इसके बाद उन्होंने विदेश के धुआंधार दौरे किए और एक साल के अंदर उन्होंने 12 देशों का सर्वोच्च नागरिक सम्मान हासिल किया। उनके 11 साल के कार्यकाल में पहले 10 साल में 14 सम्मान मिले थे लेकिन तीसरे कार्यकाल के पहले साल में 12 सम्मान मिले। इस तरह उन्होंने घरेलू राजनीति की कमजोरी को वैश्विक मंच पर विश्वगुरू के रूप में स्थापित होने के नैरेटिव से बदलने का प्रयास किया। लेकिन ऐसा लग रहा है कि इसमें बहुत कामयाबी नहीं मिली है। बहरहाल, आरएसएस के सरसंघचालक मोहन भागवत का बयान बहुत दिलचस्प है। उन्होंने हिंदुवादी विचारक मोरोपंत पिंगले के ऊपर लिखी एक किताब के विमोचन में कहा, 'जब आपको 75 साल पूरे होने पर शॉल ओढ़ाई जाती है तो समझिए कि दूसरों का मौका देने का समय आ गया है। आपको किनारे हो जाना चाहिए'। यह बात उन्होंने अपने संदर्भ में कही। ध्यान रहे संघ प्रमुख भी 11 सितंबर को 75 साल के हो रहे हैं। तभी यह कयास लगाया जा रहा है कि क्या मोहन भागवत भी रिटायर होंगे और इससे प्रधानमंत्री मोदी के ऊपर रिटायर होने का दबाव बनेगा? हालांकि संघ में भी 75 साल की उम्र में रिटायर होने का नियम नहीं है। मोहन भागवत से पहले केएस सुदर्शन संघ प्रमुख थे और 78 साल की उम्र में सेहत की वजह से रिटायर हुए। फिर भी अगर मोहन भागवत कुछ इशारा कर रहे हैं तो उसका कोई न कोई मतलब है। कहा जा रहा है कि भाजपा के अंदर भी संघ से नजदीकी रहने वाले कई नेता हैं, जो चाहते हैं कि 75 साल की उम्र में रिटायर होने का नियम प्रधानमंत्री मोदी पर भी लागू हो। परंतु मुश्किल यह है कि कोई भी यह बात खुल कर नहीं कह रहा है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भी रिटायरमेंट की चर्चा की। एक इंटरव्यू के दौरान उन्होंने कहा कि वे रिटायर होने के बाद योग, ध्यान करेंगे। वेद, उपनिषद पढ़ेंगे और बागवानी करेंगे। इसका मतलब है कि वे अंतिम समय तक किसी पद पर बने रहने या राजनीति में सक्रिय रहने के बारे में नहीं सोच रहे हैं। ध्यान रहे भारत में हर नेता की इच्छा यही रहती है कि वह पद रहते हुए ही अंतिम सांस ले। उम्र बची रहे और स्वेच्छा से कोई राजनीति से रिटायर हो जाए यह दुनिया के दूसरे आधुनिक, लोकतांत्रिक, पूंजीवादी, उपभोक्तावादी देशों में तो होता है लेकिन भारत में, जहां त्याग और अध्यात्म की महिमा बखानी जाती है वहां नहीं होता है। इसलिए अमित शाह की कही बात का बहुत महत्व है। वे अभी 61 साल के होने वाले है और उन्होंने योग, ध्यान, एक्सरसाइज से अपने को पहले से काफी फिट बनाया है। सोचें, 61 साल की उम्र में वे रिटायर होने के बाद की योजना पर चर्चा कर रहे हैं! वे कब रिटायर होंगे यह नहीं कहा लेकिन उसके बाद की जो योजना बताई उसके हिसाब से शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हुए, एक निश्चित उम्र में रिटायर हो जाना होगा। सवाल है कि क्या उन्होंने भी प्रधानमंत्री को कोई इशारा दिया? कहा नहीं जा सकता है। पिछले चुनाव के समय अरविंद केजरीवाल ने प्रधानमंत्री मोदी के सितंबर 2025 में रिटायर होने की बात कही थी और कहा था कि इस बार चुनाव अमित शाह को प्रधानमंत्री बनाने के लिए हो रहा है। तब अमित शाह ने इसका कड़ा प्रतिवाद किया था और कहा था कि चुनाव के बाद मोदी ही प्रधानमंत्री बनेंगे और 2029 में भी मोदी ही नेतृत्व करेंगे। यही बात भाजपा के सांसद निशिकांत दुबे ने भी कही है। उन्होंने कहा कि लालकृष्ण आडवाणी 90 साल की उम्र तक सांसद रहे। यह सही है कि आडवाणी 2014 का चुनाव लड़े थे और तब उनकी उम्र 84 साल थी। इसके बाद पांच साल वे सांसद रहे। जो हो इस बार प्रधानमंत्री मोदी का जन्मदिन बहुत खास हो गया है। मोहन भागवत 75 साल पूरे करने पर क्या करते हैं और मोदी क्या करते हैं इस पर सबकी नजर होगी। अगर भागवत रिटायर होते हैं और मोदी नहीं होते हैं तो क्या होगा? अगर दोनों होते हैं तो क्या होगा और अगर दोनों रिटायर नहीं होते हैं तो क्या होगा? इन सवालों का जवाब सितंबर में और उसके बाद की राजनीति में मिलेगा।

# राष्ट्रीय खेल प्रशासन विधेयक का हिस्सा होगा बीसीसीआई! अध्यक्ष रोजर बिन्नी को मिलेगा `5 साल वाला गिफ्ट'

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) भी राष्ट्रीय खेल प्रशासन विधेयक का हिस्सा होगा जिसे बुधवार को संसद में पेश किया जाना है। खेल मंत्रालय के एक विश्वसनीय सूत्र ने मंगलवार को यह जानकारी दी। बीसीसीआई भले ही सरकार से वित्तीय मदद पर निर्भर ना हो लेकिन उसे प्रस्तावित राष्ट्रीय खेल बोर्ड से मान्यता लेनी होगी। सूत्र ने कहा, 'सभी राष्ट्रीय महासंघों की तरह, बीसीसीआई को भी इस विधेयक के अधिनियम बन जाने के बाद देश के कानून का पालन करना होगा। वे मंत्रालय से वित्तीय मदद नहीं लेते लेकिन संसद का अधिनियम उन पर लागू होता है।' सूत्र ने कहा, 'बीसीसीआई अन्य सभी एनएसएफ की तरह एक स्वायत्त निकाय बना रहेगा लेकिन उनसे जुड़े विवादों का निपटारा प्रस्तावित राष्ट्रीय खेल पंचाट करेगा। यह पंचाट चुनाव से लेकर चयन तक के खेल मामलों से जुड़े विवाद का समाधान निकाय बन जाएगा।' उन्होंने कहा, 'इस विधेयक का मतलब किसी भी एनएसएफ पर सरकारी नियंत्रण नहीं है। सरकार सुशासन सुनिश्चित करने में एक सूत्रधार की भूमिका निभाएगी।' क्रिकेट (टी20 प्रारूप) को 2028 में लॉस एंजिल्स में होने वाले ओलंपिक खेलों में शामिल किया गया है और इस तरह से बीसीसीआई पहले ही ओलंपिक आंदोलन का हिस्सा बन चुका है। खेल प्रशासन विधेयक का उद्देश्य समय पर चुनाव, प्रशासनिक जवाबदेही और खिलाड़ियों के कल्याण के लिए एक मजबूत खेल ढांचा तैयार करना है। राष्ट्रीय खेल बोर्ड (एनएसबी) को पूरी तरह से केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त किया जाएगा। इसके पास व्यापक अधिकार होंगे कि वह शिकायतों के आधार पर या 'अपने विवेक' से चुनावी अनियमितताओं से लेकर वित्तीय गड़बड़ी तक के उल्लंघनों के लिए खेल संघों को मान्यता प्रदान करे या निलंबित भी करे। इस विधेयक में प्रशासकों की आयु सीमा के पेचीदा मुद्दे पर कुछ रियायत दी गई है जिसमें 70 से 75 वर्ष की आयु के लोगों को चुनाव लड़ने की अनुमति दी गई है बशर्ते संबंधित अंतरराष्ट्रीय संस्थायें आपत्ति नहीं करें। एनएसबी में एक अध्यक्ष होगा और इसके सदस्यों की नियुक्ति केंद्र सरकार द्वारा की जाएगी। यह नियुक्तियां एक खोज-सह-चयन समिति की सिफारिशों के आधार पर की जाएंगी। चयन समिति में अध्यक्ष के तौर पर कैबिनेट सचिव या खेल सचिव, भारतीय खेल प्राधिकरण (साइ) के महानिदेशक, दो खेल प्रशासक (जो किसी राष्ट्रीय खेल संस्था के अध्यक्ष, महासचिव या कोषाध्यक्ष के रूप में काम कर चुके हों) और एक प्रतिष्ठित खिलाड़ी शामिल होगा जो द्रोणाचार्य, खेल रत्न या अर्जुन पुरस्कार विजेता हो। बता दें कि बीसीसीआई के प्रेजिडेंट रोजर बिन्नी 70 साल के हो गए हैं। इस विधेयक के आने से वह 75 साल तक अपने पद पर बरकरार रह सकते हैं। यानी वह 5 साल और बीसीसीआई के प्रेजिडेंट बने रह सकते हैं। सूत्र ने कहा, 'यह एक खिलाड़ी-केंद्रित विधेयक है जो स्थिर प्रशासन, निष्पक्ष चयन, सुरक्षित खेल और शिकायत निवारण के साथ राष्ट्रीय खेल संघों का वित्तीय लेखा-जोखा और बेहतर कोष प्रबंधन सुनिश्चित करेगा।'' उन्होंने कहा, राष्ट्रीय खेल पंचाट यह सुनिश्चित करेगा कि अदालती मामलों में देरी के कारण खिलाड़ियों के करियर को कोई नुकसान न हो। अभी भी अदालतों में 350 विभिन्न मामले चल रहे हैं जहां मंत्रालय भी एक पक्ष है। इसे समाप्त करने की आवश्यकता है।' जैसा कि पिछले साल जारी किए गए मसौदे में उल्लेख किया गया था, बोर्ड के पास राष्ट्रीय खेल महासंघों को मान्यता देने और किसी राष्ट्रीय खेल महासंघ के निलंबित होने की स्थिति में व्यक्तिगत खेलों के संचालन के लिए तदर्थ पैनल गठित करने का अधिकार होगा।

# जैक क्राउली-बेन डकेट के समय बर्बाद करने पर फिर भड़के शुभमन गिल, प्रेस कॉन्फ्रेंस में ही लंका लगा दी

एजेंसी मैनचेस्टर

भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने लॉर्ड्स टेस्ट के तीसरे दिन के अंत में इंग्लैंड के सलामी बल्लेबाजों द्वारा अपनाई गई देरी करने की रणनीति की आलोचना करते हुए मंगलवार को कहा कि क्रीज पर 90 सेकेंड देरी से आना खेल भावना के अनुरूप नहीं था। मैनचेस्टर में चौथे टेस्ट से पहले मीडिया से बातचीत का अंत गिल ने विस्फोटक अंदाज में किया जब उनसे तीसरे मैच के दौरान मैदान पर तनाव के बारे में पूछा गया। लॉर्ड्स में दोनों पक्षों द्वारा दिखाई गई आक्रामकता के बाद से इंग्लैंड की मीडिया भारतीय और घरेलू टीम के खिलाड़ियों से लगातार यह सवाल पूछ रही है। गिल ने आक्रामक अंदाज में कहा, 'हां, बहुत से लोग इसके बारे में बात कर रहे हैं इसलिए मैं एक बार और सभी के लिए स्पष्ट कर दूं कि उस दिन इंग्लैंड के बल्लेबाजों के पास सात मिनट का खेल बचा था, वे क्रीज पर 90 सेकेंड देरी से आए, 10 नहीं, 20 नहीं, बल्कि 90 सेकेंड देरी से।' उन्होंने कहा, 'हां, अधिकतर टीमें यही (देरी करने की रणनीति) करती हैं। अगर हम इस स्थिति में होते तो हम भी कम ओवर खेलना पसंद करते लेकिन ऐसा करने का एक तरीका होता है और हमें लगाता है कि अगर आपके शरीर पर गेंद लगती है तो फिजियो को मैदान पर आने की इजाजत है और यह उचित भी है।' 90 सेकेंड से देरी पर आने पर गिल ने नाराजगी जाहिर की गिल ने कहा, 'लेकिन मुझे नहीं लगता कि क्रीज पर 90 सेकेंड देरी से आना खेल भावना के अनुसार है।' बुमराह ने तीसरे दिन आखिरी ओवर फेंका था और दिन का खेल खत्म होने से ठीक पहले खेल में देरी करने के लिए जैक क्राउली की तरफ व्यंग्यात्मक लहजे में ताली बजाई थी। भारतीय खिलाड़ियों और डकेट के बीच भी बहस हुई थी। टेस्ट कप्तान के रूप में अपनी पहली श्रृंखला में गिल ने भी क्रॉली को हिम्मत दिखाने को कहा था। गिल ने कहा, 'उस घटना से ठीक पहले, बहुत सी ऐसी चीजें हुईं जिनके बारे में हमें लगता था कि उन्हें नहीं होना चाहिए था, लेकिन वे हुईं, मैं यह नहीं कहूंगा कि मुझे इस पर बहुत गर्व है।' उन्होंने कहा, 'लेकिन इसकी भूमिका थी, यह अचानक नहीं हुआ और हमारा ऐसा करने का कोई इरादा नहीं था।' भारतीय कप्तान ने कहा, 'लेकिन बात बस इतनी है कि आप एक मैच खेल रहे हैं, आप जीतने के लिए खेल रहे हैं और इसमें बहुत सारी भावनाएं शामिल होती हैं और जब आप देखते हैं कि कुछ ऐसी चीजें हो रही हैं जो नहीं होनी चाहिए तो कभी-कभी भावनाएं अचानक से आ जाती हैं।'

# इंतजार करो, वो ऐसा ऑलराउंडर बनेगा दुनिया देखती रह जाएगी... रवि शास्त्री ने किस भारतीय के बारे में की ये भविष्यवाणी

एजेंसी मैनचेस्टर

पूर्व मुख्य कोच रवि शास्त्री का मानना है कि वाशिंगटन सुंदर में भारत का अगला अदद टेस्ट ऑलराउंडर बनने की क्षमता है, क्योंकि वह घरेलू परिस्थितियों में गेंदबाजी में अच्छा प्रदर्शन करने के साथ नैसर्गिक रूप से प्रतिभाशाली बल्लेबाज भी है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 2021 में ब्रिसबेन में टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण करने वाले 25 वर्षीय ऑफ स्पिनर वाशिंगटन को उसके बाद इस प्रारूप में बहुत अधिक मौके नहीं मिले हैं। उन्होंने अब तक 11 टेस्ट मैच में 545 रन बनाए हैं और 30 विकेट लिए हैं। शास्त्री ने 'द आईसीसी रिव्यू' में कहा, 'मुझे शुरू से ही वाशिंगटन का खेल पसंद रहा है। जब मैंने उसे पहली बार देखा तो मैंने कहा था कि वह कमाल का खिलाड़ी है और उसमें कई वर्षों तक भारत का अदद ऑलराउंडर बनने की क्षमता है।' शास्त्री का मानना है कि वाशिंगटन को विशेषकर भारत की टर्निंग पिचों पर लाल गेंद से अधिक मैच खेलने चाहिए थे। उन्होंने कहा, 'वह अभी सिर्फ 25 साल का है। मुझे लगता है कि उसे और ज्यादा टेस्ट क्रिकेट खेलना चाहिए था। भारत में जहां गेंद टर्न ले रही हो, वहां वह घातक साबित हो सकता है, जैसा कि न्यूजीलैंड के खिलाफ उसने प्रदर्शन किया था। उसने कुछ सीनियर स्पिनरों से बेहतर प्रदर्शन किया था और इसके साथ ही वह अच्छा बल्लेबाज भी है।' वाशिंगटन ने न्यूजीलैंड के खिलाफ 2024 की घरेलू टेस्ट श्रृंखला में चार पारियों में 16 विकेट लिए थे। शास्त्री ने उनकी बल्लेबाजी क्षमता की भी तारीफ की और कहा कि उन्हें बल्लेबाजी क्रम में ऊपर भी भेजा जा सकता है। शास्त्री ने कहा, 'वह नैसर्गिक रूप से प्रतिभाशाली बल्लेबाज है। वह बल्लेबाजी क्रम में आठवें नंबर का बल्लेबाज नहीं है। वह बहुत जल्दी छठे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए आ सकता है।' शास्त्री ने कहा कि वाशिंगटन की तकनीक अच्छी है जिससे वह विदेशी परिस्थितियों में भी सफल हो सकता है। उन्होंने कहा, ''एक बार जब वह आत्मविश्वास हासिल कर लेगा तो मुझे लगता है कि उसके खेल में और निखार आ जाएगा। उसने विदेश में भी अपनी लय बरकरार रखी है। वह फिट खिलाड़ी है और वह वह लंबे स्पैल भी करता है और जरूरत पड़ने पर नियंत्रण भी बनाए रख सकता है।'

# मैनचेस्टर टेस्ट में बल्लेबाजो की होगी चांदी या गेंदबाज करेंगे कमाल पिच के साथ जानें कैसा रहेगा मौसम

एजेंसी मैनचेस्टर

भारत और इंग्लैंड के बीच एक और रोमांचक टेस्ट 23 जुलाई यानी बुधवार से मैनचेस्टर के ओल्ड ट्रैफर्ड क्रिकेट ग्राउंड में शुरू होने वाला है। यह 5 मैचों की टेस्ट सीरीज का चौथा टेस्ट होगा। अब तक सीरीज में कुल 3 मुकाबले खेले गए हैं, जिसमें से 2 इंग्लैंड ने जबकि 1 भारत ने जीता है। इस वक्त मेजबान टीम इंग्लैंड सीरीज में 2-1 से आगे है। अब अगर टीम इंडिया को इस सीरीज को अपने नाम करना है तो हर हाल में बचे हुए दोनों मुकाबले जीतने होंगे। ऐसे में भारत और इंग्लैंड के बीच चौथा टेस्ट काफी ज्यादा रोमांचक हो सकता है। आइये, आपको इस मैच से पहले मैनचेस्टर की पिच और मौसम के बारे में बताते हैं। मैनचेस्टर के ओल्ड ट्रैफर्ड स्टेडियम की पिच गेंदबाजों के लिए काफी ज्यादा मददगार साबित होती है। खासकर तेज गेंदबाजों के लिए। यहां पर तेज गेंदबाजों को अच्छा उछाल मिलता है। बॉल काफी सीम भी होती है। हालांकि, जैसे-जैसे मैच आगे बढ़ता है तो पिच स्लो हो जाती है, जिससे स्पिनर्स का रोल भी बढ़ जाता है। स्पिनर्स को भी यहां फायदा होता है। इस पिच पर बल्लेबाजों के लिए भी कुछ न कुछ मदद है। टीमें टॉस जीतकर अक्सर यहां पहले बैटिंग करती हैं। पहली पारी का औसत स्कोर यहां 330 रन है। इस मैदान पर पहले बैटिंग करते हुए टीमों ने 84 में से 36 टेस्ट जीते हैं। भारत का स्क्वाड- यशस्वी जयसवाल, केएल राहुल, करुण नायर, शुभमन गिल (कप्तान), ऋषभ पंत (विकेटकीपर), रविंद्र जडेजा, वॉशिंगटन सुंदर, अंशुल कंबोज, आकाश दीप, जसप्रित बुमरा, मोहम्मद सिराज, अभिमन्यु ईश्वरन, कुलदीप यादव, शार्दुल ठाकुर, प्रसिद्ध कृष्णा, साई सुदर्शन, ध्रुव जुरेल।

## व्यापार

# लोगों ने हवा में `कैंसर ट्रेन' भी चला दी, अब सरकार ने कह दी ये बात

एजेंसी नई दिल्ली

हवाबाजी का इससे बड़ा नमूना भला और क्या होगा। लोगों ने ' कैंसर ट्रेन ' की ऐसी हवा फैलाई कि अब सरकार को इस पर सफाई देनी पड़ी है। सरकार ने बताया है कि भारतीय रेलवे में 'कैंसर ट्रेन' नाम की कोई ट्रेन नहीं चल रही है। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्य मंत्री प्रतापराव जाधव ने राज्यसभा में यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सरकार देशभर में कैंसर के इलाज को बेहतर बनाने के लिए काम कर रही है। इसके लिए राज्यों को वित्तीय मदद दी जा रही है। मंत्री प्रतापराव जाधव ने राज्यसभा में एक सवाल के जवाब में यह बात कही। उन्होंने बताया कि रेल मंत्रालय ने उन्हें बताया है कि कैंसर ट्रेन नाम की कोई ट्रेन भारतीय रेलवे के तहत नहीं चलाई जा रही है। सरकार कैंसर के इलाज को बेहतर बनाने के लिए योजना चला रही है। यह 'टर्शियरी यानी तृतीयक कैंसर देखभाल सुविधाओं को मजबूत करने' से जुड़ी है। इसके तहत राज्य कैंसर संस्थान (SCI) और तृतीयक कैंसर देखभाल केंद्र (TCCC) बनाने के लिए पैसे दिए जाते हैं। हर राज्य कैंसर संस्थान के लिए 120 करोड़ रुपये तक की मदद दी जाती है। इसी तरह हर तृतीयक कैंसर देखभाल केंद्र के लिए 45 करोड़ रुपये तक की सहायती मिलती है। अभी तक इस योजना में 39 संस्थानों को मंजूरी दी गई है। इनमें 19 SCI और 20 TCCC शामिल हैं। पंजाब के अमृतसर में सरकारी मेडिकल कॉलेज में SCI है। फजिल्का के सिविल अस्पताल में TCCC है। अमृतसर के सरकारी मेडिकल कॉलेज में रेडियोथेरेपी और कीमोथेरेपी की सुविधा है। फजिल्का के सिविल अस्पताल में कीमोथेरेपी की सुविधा है। मंत्री जाधव ने यह भी बताया कि परमाणु ऊर्जा विभाग के तहत टाटा मेमोरियल सेंटर ने पंजाब में दो अस्पताल खोले हैं। एक संगरूर में है, जिसका नाम होमी भाभा कैंसर अस्पताल (HBCH) है। दूसरा न्यू चंडीगढ़ में है, जिसका नाम होमी भाभा कैंसर अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र (HBCH एंड आरसी) है। ये दोनों अस्पताल काम कर रहे हैं। पंजाब सरकार भी कैंसर के इलाज के लिए मदद कर रही है। मुख्यमंत्री पंजाब कैंसर राहत कोष योजना (MMPCRKS) के तहत फजिल्का, पटियाला, फरीदकोट और बठिंडा में कैंसर का इलाज उपलब्ध है। इससे साफ हो जाता है कि 'कैंसर ट्रेन' नाम की कोई ट्रेन नहीं है। सरकार कैंसर के मरीजों को बेहतर इलाज देने के लिए कई कदम उठा रही है। मरीजों को अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएं मिलें, इसके लिए सरकार लगातार काम कर रही है।

# भारत को मिले अपाचे हेलीकॉप्टर की कीमत कितनी, दुश्मन का दिल दहलाने वाले ये `लड़ाकू' कौन बनाता है

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय सेना को अमेरिकी कंपनी बोइंग से तीन अपाचे AH-64E लड़ाकू हेलीकॉप्टर मिले हैं। यह डिलीवरी 4,168 करोड़ रुपये के कुल छह अपाचे हेलीकॉप्टरों के सौदे का हिस्सा है। इस सौदे के हिसाब से एक अपाचे हेलीकॉप्टर की कीमत लगभग 860 करोड़ से 948.5 करोड़ रुपये के बीच है। यह इसे दुनिया के सबसे एडवांस और महंगे सैन्य हेलीकॉप्टरों में से एक बनाता है। इसे अमेरिकी सेना भी इस्तेमाल करती है। यह सौदा भारतीय वायु सेना के बोइंग के साथ 2015 में हुए अरबों डॉलर के सौदे से अलग है। उस सौदे में 22 अपाचे E-मॉडल हेलीकॉप्टरों की सप्लाई की गई थी, जो 2020 में पूरी हो गई थी। बाद में रक्षा मंत्रालय ने भारतीय सेना के लिए 4,168 करोड़ रुपये की लागत से छह AH-64E की सप्लाई के लिए एक और समझौता किया था। AH-64E अपाचे सिर्फ एक हेलीकॉप्टर नहीं है। यह एक बेहद जटिल और कई भूमिका वाला लड़ाकू प्लेटफॉर्म है। इसकी ऊंची कीमत कई एडवांस तकनीकों और क्षमताओं के कारण है। यह हेलीकॉप्टर लॉन्गबो रडार से लैस होता है। इस तरह का रडार रोटर के ऊपर लगा होता है। इससे हेलीकॉप्टर खुद को छिपाए रखकर भी टारगेट को स्कैन और निशाना बना सकता है। MUM-T तकनीक हेलीकॉप्टर को ड्रोन के साथ मिलकर काम करने, दुश्मन के रडार को जाम करने और सीधे कॉकपिट से हमला करने की सुविधा देती है। इन्फ्रारेड, लेजर-गाइडेड और नाइट-विजन उपकरण इसे हर मौसम और रात में भी प्रभावी बनाते हैं। इसमें मजबूत कवच, क्रैश-प्रतिरोधी सीटें और इलेक्ट्रॉनिक जवाबी उपाय शामिल हैं जो पायलट और हेलीकॉप्टर की सुरक्षा बढ़ाते हैं। AH-64E अपाचे हेलीकॉप्टर का सबसे नया मॉडल है। इसे खास तौर पर युद्ध के मैदान में अलग-अलग तरह के काम करने के लिए बनाया गया है। यह मुश्किल हालातों में भी काम कर सकता है। इसमें ऐसे सेंसर लगे हैं जो दूर से ही जानकारी देने में समर्थ हैं। यह हेलीकॉप्टर अपने आसपास के माहौल से जुड़कर सभी उपलब्ध उपकरणों का इस्तेमाल कर सकता है। यह खरीद भारत की 'मेक इन इंडिया' पहल के बावजूद विदेशी रक्षा उपकरणों पर निर्भरता को भी उजागर करती है। हालांकि, ये अत्यधिक विशिष्ट और सामरिक रूप से महत्वपूर्ण प्रणालियां हैं। व्यापार के नजरिए से यह सप्लाई चेन मैनेजमेंट, विशेष रूप से कोरोना महामारी और रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण हुए व्यवधानों को भी सामने लाती है। इसके चलते इन हेलीकॉप्टरों की डिलीवरी में 15 महीने की देरी हुई। यह डील भारत की रक्षा आधुनिकीकरण की महत्वाकांक्षाओं और इसके लिए किए जा रहे बड़े वित्तीय निवेशों को दर्शाती है जो वैश्विक रक्षा निर्माताओं के लिए आकर्षक बाजार बने रहने का संकेत है।

# पेटीएम ने की धुआंधार वापसी, मुनाफे में लौटी, इसका मतलब समझिए

एजेंसी नई दिल्ली

पेटीएम का संचालन करने वाली वन 97 कम्युनिकेशंस ने वित्त वर्ष 2025-26 की पहली तिमाही में फायदा दर्ज किया है। यह पिछले वर्ष की समान अवधि में 839 करोड़ रुपये के नुकसान के मुकाबले 122.5 करोड़ रुपये का समेकित शुद्ध लाभ है। कंपनी का परिचालन से राजस्व 28% बढ़कर 1,917 करोड़ रुपये हो गया। पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में यह 1,502 करोड़ रुपये था। यह बढ़ोतरी मुख्य रूप से सब्सक्रिप्शन मर्चेंट की संख्या में बढ़त, ज्यादा GMV (ग्रॉस मर्चेंडाइज वैल्यू) और फाइनेंशियल सर्विसेज के डिस्ट्रीब्यूशन से रेवेन्यू में ग्रोथ के कारण हुई है। पेटीएम का वापस मुनाफे में आने का मतलब है कि कंपनी ने खर्चों से ज्यादा आय अर्जित की है। इसका नतीजा उसे शुद्ध लाभ में हुआ है। वन 97 कम्युनिकेशंस को वित्त वर्ष 2024-25 की चौथी तिमाही में 540 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ था। लेकिन, अब कंपनी मुनाफे में आ गई है। जनवरी-मार्च तिमाही में कंपनी की आय 1,911 करोड़ रुपये थी। इस बार यह मामूली रूप से बढ़कर 1,917 करोड़ रुपये हो गई है। पेटीएम की आय में 28% की वृद्धि हुई है। यह 1,918 करोड़ रुपये हो गई है। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि ज्यादा व्यापारियों ने पेटीएम की सदस्यता ली है। साथ ही, वित्तीय सेवाओं से भी कंपनी की आय बढ़ी है। कंपनी का कॉन्ट्रिब्यूशन प्रॉफिट 52% बढ़कर 1,151 करोड़ रुपये हो गया है। कॉन्ट्रिब्यूशन मार्जिन 60% रहा, जो पिछले साल से 10% ज्यादा है। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि कंपनी को पेमेंट से ज्यादा आय हुई। वित्तीय सेवाओं से भी ज्यादा पैसा मिला और खर्चे भी कम हुए। कंपनी ने बताया कि EBITDA और PAT मुनाफे में बदल गए हैं। ये 72 करोड़ रुपये (4% मार्जिन) और 123 करोड़ रुपये रहा। कंपनी ने AI की मदद से काम को बेहतर बनाया, लागत को कम रखा और अन्य स्रोतों से भी आय हुई।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक दयाराम दिव्य द्वारा मुद्रक वेदांत प्रभाकर, मेधा कम्प्यूटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, ऑफिस नं. 128, वार्ड नं. 25, नंदभवन कांवाखेड़ा पार्क के पास, भीलवाड़ा 311001 (राज.) से मुद्रित एवं एस-20, प्रतापनगर, भीलवाड़ा (राज.) से प्रकाशित। संपादक दयाराम दिव्य 96949 57624, 87695 58132 * PRB एक्ट के तहत ख़बरों के चयन के लिए उत्तरदायी। सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र भीलवाड़ा होगा